PHILOSOPHY

PG-III Sem. (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449985

अनुमान के घटक - 'पक्ष'

→ अनुमान के तीन घटक हैं - पक्ष, साध्य और हेतु।

→ 'पक्ष' कहा जाता है - 'पक्ष्यते इति पक्षः' अर्थात् जिसमें साधन और साध्य दोनों समाविष्ट होने की क्षमता है, वह 'पक्ष' है। दूसरे शब्दों में पक्ष साध्य और साधन दोनों का आश्रय या अधिकरण है। उदाहरणार्थ -

जहाँ जहाँ धुँआ है वहाँ वहाँ आग है, यथा - पाकशाला में

पर्वत पर धुँआ है।

∴ पर्वत पर आग है।

प्रस्तुत उदाहरण में 'पर्वत' पक्ष है क्योंकि यह हेतु और साध्य (धूम्र और अग्नि) - दोनों का अधिकरण है।

→ पाकशाला भी अग्नि और धूम (साध्य और हेतु) का अधिकरण है किन्तु वह इस अनुमान का 'पक्ष' सम्मिलित नहीं है। वस्तुतः पक्ष वह अधिकरण है जिसमें साध्य की उपस्थिति संदिग्ध रहती है।

→ पक्ष को 'एकदेशी' अथवा 'धर्मी' भी कहा गया है क्योंकि साधन और साध्य रूप दो धर्म या एकदेश इसमें रहते हैं।

→ कुछ विद्वानों ने तुलना की दृष्टि से ऐसा माना है कि पाश्चात्य निगमनात्मक तर्कशास्त्र में जिसे न्याय का 'लघुपद' कहा जाता है, भारतीय न्यायशास्त्र में उसे ही अनुमान का 'पक्ष' कहा गया है। किन्तु यहाँ ध्यातव्य है कि 'लघुपद' तथा 'पक्ष' की अवधारणा और विषय में मौलिक भेद है।

Scanned with CamScanner

पाश्चात्य न्यायशास्त्र में 'लघुपद' की परिभाषा देते हुये कहा गया है कि न्याय के निष्कर्ष का उद्देश्य किसी न्याय का लघुपद होता है। दूसरी ओर भारतीय पद्धति में न्याय-वाक्यों का अवयवों उद्देश्य-विधेय में बाँटकर नहीं किया जाता। यहाँ साध्य-साधन और हेतु की ही प्रधानता है। इस रूप में पक्ष को परिभाषित करते हुये कहा गया है कि "पक्ष वह है जो साध्य और साधन दोनों का अधिकरण है। पक्ष में साधन निश्चित रूप से तथा साध्य अनिश्चित रूप से उपस्थित रहता है।"

→ भारतीय न्यायशास्त्र में 'पक्ष' के समानान्तर दो पद और पाये जाते हैं - 'सपक्ष' और 'विपक्ष' अथवा 'असपक्ष'।

→ जिस स्थान में साध्य की सत्ता पहले से निश्चित हो उसे 'सपक्ष' कहते हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से यह पक्ष के समान होना चाहिये किन्तु पक्ष में साध्य की उपस्थिति संदिग्ध होती है जबकि सपक्ष में निश्चित।

→ पक्ष का दूसरा समानान्तर पद है - 'विपक्ष' या 'असपक्ष'। वह स्थान जहाँ साध्य का अभाव सर्वदा निश्चित हो 'असपक्ष या विपक्ष कहलाता है। उदाहरणार्थ- नदी, तालाब, जलाशय आदि असपक्ष हैं जहाँ साध्य का अभाव निश्चित है। 'पक्ष' और 'विपक्ष' में अन्तर यह है कि पक्ष में साध्य की सत्ता संदिग्ध होती है जबकि विपक्ष या असपक्ष में साध्य का अभाव निश्चित रहता है।

Scanned with CamScanner